समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

H1B वीजा विवाद पर बोले जयशंकर : “इस वास्तविकता से भाग नहीं सकते”

Publisher

Published on 26 Sep 2025

संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) के मंच से भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक बार फिर स्पष्ट और सशक्त संदेश दिया। उन्होंने वैश्विक कार्यबल की बढ़ती आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि आने वाले वर्षों में यह विश्व व्यवस्था के लिए अहम मुद्दा होगा।

H1B वीजा विवाद की पृष्ठभूमि

H1B वीजा लंबे समय से भारतीय पेशेवरों के लिए अमेरिका में रोज़गार का प्रमुख साधन रहा है। डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान इस वीजा पर कई तरह की सख्त पाबंदियाँ लगाई गई थीं। इसका असर न केवल भारतीय आईटी और टेक्नोलॉजी प्रोफेशनल्स पर पड़ा बल्कि अमेरिकी कंपनियों की उत्पादकता पर भी देखने को मिला।

बिना नाम लिए ट्रंप पर निशाना

जयशंकर ने अपने संबोधन में डोनाल्ड ट्रंप का नाम लिए बिना उनकी आव्रजन नीतियों पर सीधा हमला बोला। उन्होंने कहा कि “जनसांख्यिकी की वास्तविकताओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कई देश अपनी राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर कार्यबल की मांग पूरी नहीं कर सकते। यह वैश्विक स्तर पर सहयोग की माँग करता है।”

वैश्विक कार्यबल की आवश्यकता

जयशंकर ने यह भी कहा कि आज दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ जनसंख्या संरचना और कौशल के बीच बड़ा अंतर मौजूद है। विकसित देशों में वृद्ध होती आबादी के कारण कुशल श्रमिकों की भारी कमी है, वहीं भारत जैसे देशों के पास युवा और कुशल कार्यबल की प्रचुरता है। इस असमानता को दूर करने के लिए आव्रजन और वीज़ा नीतियों में बदलाव आवश्यक है।

‘इस वास्तविकता से बच नहीं सकते’

जयशंकर ने अपने भाषण में स्पष्ट कहा—
“जनसांख्यिकी के कारण कार्यबल की मांग और आपूर्ति में असंतुलन है। कई देश राष्ट्रीय स्तर पर इस आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिससे हम भाग नहीं सकते।”
उनका यह बयान अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह समझाने के लिए था कि दुनिया की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए प्रवासियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

भारतीय प्रवासियों का योगदान

भारत दुनिया में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय रखता है। लाखों भारतीय पेशेवर अमेरिका, यूरोप, मध्य पूर्व और एशिया के अन्य देशों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। H1B वीजा के तहत भारतीय आईटी पेशेवरों ने अमेरिकी टेक्नोलॉजी उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यही कारण है कि वीज़ा प्रतिबंधों का मुद्दा भारत-अमेरिका संबंधों में एक अहम बिंदु रहा है।

ट्रंप की नीतियों पर अंतरराष्ट्रीय आलोचना

डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल के दौरान लागू की गई आव्रजन नीतियों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचना हुई थी। कई विशेषज्ञों का मानना है कि इससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता कमजोर हुई। अब, जब ट्रंप फिर से राजनीतिक रूप से सक्रिय हैं, जयशंकर का यह बयान उन्हें अप्रत्यक्ष संदेश देने जैसा माना जा रहा है।

भारत की रणनीतिक स्थिति

भारत लगातार यह कहता आया है कि उसकी सबसे बड़ी ताकत उसका युवा जनसांख्यिकीय लाभांश है। आने वाले दशकों में भारत के पास 25 से 40 वर्ष आयु वर्ग का विशाल कार्यबल होगा। वहीं यूरोप और अमेरिका जैसे क्षेत्रों में कार्यबल की कमी बढ़ती जाएगी। इस परिदृश्य में भारत वैश्विक आपूर्ति शृंखला में “मानव संसाधन प्रदाता” के रूप में बड़ी भूमिका निभा सकता है।

कूटनीतिक संतुलन

जयशंकर का भाषण केवल अमेरिका तक सीमित नहीं था। यह यूरोप, जापान और अन्य विकसित देशों के लिए भी संदेश था। उन्होंने कहा कि यदि देश अपनी सीमाओं के भीतर ही कार्यबल की ज़रूरत पूरी करने की सोचेंगे तो आर्थिक विकास बाधित होगा। यह वक्त है जब राष्ट्रों को वैश्विक सहयोग और प्रवासी श्रमिकों के महत्व को स्वीकार करना चाहिए।

भारत-अमेरिका संबंधों पर असर

विशेषज्ञों का मानना है कि जयशंकर का यह बयान भारत-अमेरिका संबंधों में भविष्य की दिशा तय कर सकता है। बाइडेन प्रशासन ने जहाँ H1B वीजा के प्रति अपेक्षाकृत सकारात्मक रुख दिखाया, वहीं ट्रंप के संभावित वापसी के संकेतों ने चिंताओं को बढ़ा दिया है। भारत यह संदेश देना चाहता है कि वीज़ा प्रतिबंध केवल प्रवासियों के लिए नहीं, बल्कि अमेरिकी कंपनियों के लिए भी नुकसानदेह हैं।

विदेश मंत्री एस. जयशंकर का संयुक्त राष्ट्र में दिया गया भाषण केवल भारत की आवाज़ नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चेतावनी थी। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जनसांख्यिकी और वैश्विक कार्यबल की वास्तविकता से कोई देश बच नहीं सकता। आज के दौर में प्रवासी समुदाय केवल आर्थिक विकास ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक सेतु का काम भी कर रहा है।
H1B वीज़ा विवाद इसी बड़े परिदृश्य का हिस्सा है, जहाँ प्रवासियों की अहमियत को समझना अनिवार्य है।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.